**शोधार्थी : मधुलिका**

**शोध–निर्देशक : डॉ. इन्दु वीरेन्द्रा**

**विभाग : हिंदी**

**विषयः भीष्म साहनी के साहित्य में समाज और संस्कृति का अध्ययन**

## शोध–सार

प्रस्तुत शोध–प्रबंध ''भीष्म साहनी के साहित्य में समाज और संस्कृति का अध्ययन'' का यह शोध–सार है। साहित्य, समाज और संस्कृति त्रिकोणीय आयाम है। साहित्य समाज के युगान्तकारी घटनाक्रम से प्रेरणा प्राप्त करता है, लेखक युग की प्रधान घटनाओं तथा उसके अभावों से संदिग्ध रूप से एकाकार होता है। समाज और उससे संबध संस्कृति में व्यक्ति अथवा लेखक का मन संघर्षरत रहता है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''भीष्म साहनी के साहित्य में समाज और संस्कृति का अध्ययन'' को पाँच अध्यायों और उसके विभिन्न उप–अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिसका सार अग्रलिखित है। हिंदी के प्रगतिशील साहित्य की पहली पंक्ति के सर्जक प्रतिष्ठित साहित्यकार भीष्म साहनी के जोवन और साहित्य पर चर्चा की है, जिसमें उनके जन्मकाल की परिस्थितियाँ, भीष्म साहनी का व्यवसाय, जीवन की विभिन्न स्थितियाँ, शरणार्थी रूप में भारत आगमन, चिंतनपरक विकास, प्रगतिशील आंदोलन से संपर्क, विदेश यात्राा आदि का शोधपूर्ण अध्ययन किया गया है। भीष्म साहनी का दृष्टिकोण प्रगतिशील है, उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से आडंबरहीन भावना एवं शोषणवादी संस्कृति का प्रतिवाद किया है। उनकी दृष्टि उदारवादी एवं संघर्षशील है। उन्होंने साहित्य में समाज, परिवार,

विवाह, प्रेम, काम आदि के संबंध में जीर्ण–शीर्ण रूढ़ियों का विरोध करते हुए नए मूल्य स्थापित किए हैं। स्त्रो–पुरुष संबंधों में समान अधिकार की मांग से पारिवारिक मूल्यों में बदलाव आए हैं, संयुक्त परिवार का विघटन हुआ है। पाप–पुण्य की भावनाएँ धर्म से निर्धारित न होकर तर्क के आधार पर निर्धारित होने लगी हैं। काम–भावना को शरीर की सहज, स्वाभाविक, वृत्ति मानते हुए धर्म–अधर्म से जोड़ा जाना व्यर्थ माना गया है। व्यक्ति की समाज में स्थिति उसके परिवार या जाति से निर्धारित न होकर श्रेणी से आँकी जाने लगी है। अब जाति के स्थान पर वर्ग बोध को महत्व दिया गया है। वर्तमान मे आस्था प्रकट करते हुए प्रत्येक क्षण को मूल्यवान व अर्थपूर्ण समझते हुए नए प्रतिमान स्थापित किए हैं।

प्रस्तुत शोध–प्रबंध में इसका आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।